II. HINDI SPECIFIC (DSE 2): (Credits: Theory-05, Tutorial-01)
अनुशासनिक विशिष्ट चयन (DSE 2): (क्रेडिट: सैद्धान्तिक -05, अभ्यास -01)

Marks : 25 (MSE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) =100	Pass Marks: Th (MSE +ESE) = 40

प्रश्न पत्र के लिए निर्देश

मध्य छमाही परीक्षा :

*प्रश्नों के दो समूह होंगे। **खण्ड 'A'** में पाँच **अत्यंत लघु उत्तरीय** 1 अंक के **अनिवार्य** प्रश्न होंगे। **खण्ड 'B'** में छः में से किन्हीं चार 5 अंको के **वर्णनात्मक प्रश्नों** के उत्तर देने होंगे।*

छमाही परीक्षा :

*प्रश्नों के दो समूह होंगे। **खण्ड 'A' अनिवार्य है** जिसमें दो प्रश्न होंगे। **प्रश्न संख्या 1** में दस **अत्यंत लघु उत्तरीय** 1 अंक के प्रश्न होंगे। **प्रश्न संख्या 2 लघु उत्तरीय** 5 अंक का प्रश्न होगा। **खण्ड 'B'** में छः में से किन्हीं चार 15 अंको के **वर्णनात्मक प्रश्नों** के उत्तर देने होंगे।*

***नोट :** सैद्धान्तिक परीक्षा में पूछे गए प्रत्येक प्रश्न में उप–विभाजन हो सकते हैं।*

कबीर दास एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सैद्धान्तिक: 75 व्याख्यान , अभ्यास : 15 व्याख्यान

कबीर दास –

इकाई– 1 कबीर – जीवन और रचना संसार।

इकाई– 2 कबीर (पद 1 से 21 तक)

सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इकाई– 1 निराला– जीवन और रचना संसार।

इकाई– 2 निराला की कविताएं

– सखि, वसन्त आया, जुही की कली, जागो फिर एक बार, बादल–राग,
वर दे वीणावादिनी वर दे, भारती जय विजय करे, तोड़ती पत्थर,
मौन रही हार, स्नेह–निर्झर बह गया है, गहन है यह अंधकार।

निर्धारित पुस्तकें –

कबीर दास

- **कबीर –** : आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

- **रागविराग –** : डॉ० रामविलास शर्मा

योगदा सत्संग महाविद्यालय, जगन्नाथपुर, रांची

हिंदी विभाग

Date .....

"कबीर की काव्यगत विशेषताएँ" (समग्र)

→ प्रस्तुत शीर्षक में हम तीन प्रमुख बिंदुओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

(1) कबीर की भक्ति भावना
(2) कबीर का समाज दर्शन
(3) कबीर की काव्यकला

→ संक्षेप में कबीर के काव्य में व्याप्त रहस्यवाद पर भी चर्चा की जायेगी।

(*) कबीर की भक्ति भावना :-

→ कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा के संत कवि हैं। उनकी रचनाएँ हैं- साखी, सबद, रमैनी जिनका संकलन उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' रूप में किया। कबीर पढ़े-लिखे न थे। वे गुरु रामानंद के शिष्य थे। भक्तिकाल की निर्गुण धारा के संत कवि कबीर ने नाथ पन्थियों की हठयोग साधना में 'भक्ति भावना' का समावेश कर उसकी नीरसता को सरसता में परिवर्तित कर दिया। कबीर की भक्ति भावना का विवेचन निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है :-

(1) नामस्मरण :-

भक्तों ने प्रभु नाम स्मरण की महत्ता का प्रायः गुणगान किया है। कबीर भी 'रामनाम' की महिमा का बखान करते हैं।

Date ....

कबीर का मत है कि एकाग्रचित होकर जब ईश्वर के नाम का जप किया जाता है, तभी वह फलदायी होता है। वे ऐसे नाम स्मरण का विरोध करते हैं जिसमें मन दसों दिशाओं में घूमता रहता है :-

" माला तो कर में फिरै जीभ फिरै मुख माँहि
मनुवाँ तों दस दिसि फिरै सो तो सुमिरन नाँहि ।।"

(2) आचरण की शुद्धता :-

कबीर की भक्तिभावना में सदाचार पर बल दिया गया है। वे सदाचार को भक्ति का प्रमुख अंग स्वीकारते हैं। आचरण की शुद्धता के लिए व्यक्ति को सम्पूर्ण विकारों का परित्याग करना होगा। विकारों के जनक हैं — कंचन और कामिनी - इनके त्याग से ही सदाचार का मार्ग प्रशस्त होता है।

" नारि नसावै तीन सुख, जा नर पासैं होय।
भगति मुकति निज ज्ञान में, पैसि न सकई कोय ।।"

(3). ईश्वर में विश्वास :-

कबीर को भगवान की सर्वशक्तिमता में विश्वास है। श्रद्धा और विश्वास भक्ति के अनिवार्य तत्व हैं। कबीर को पूरा विश्वास है कि परमात्मा पूर्ण समर्थ है। वह राई को पर्वत एवं पर्वत को राई करने की सामर्थ्य रखता है, यथा :-

" साँई सूं सब होत है बन्दे थैं कछु नांहि।
राई थैं परबत करैं, परबत राई माँहि।।"

Date .....

(4) गुरु की महत्ता :-

कबीर की भक्ति में गुरु को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया है। कबीर की दृष्टि में गुरु 'गोविन्द' से भी बढ़कर है क्योंकि 'हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर' कहकर कबीर ने गुरु को सबसे बड़ा आश्रय-स्थान माना है, जो ईश्वर के रूठने पर भी भक्त की रक्षा करता है। कबीर ने गुरु को 'सतगुरु' के नाम से अभिहित किया है तथा उसकी अनन्त महिमा का गुण-गान किया है, क्योंकि वह अनन्त उपकार करने वाला होता है, उसमें अनन्त दृष्टि प्रदान करने की शक्ति होती है और वह उस अनन्त एवं असीम ब्रह्म का साक्षात्कार कराने में समर्थ होता है।

"सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार॥"

(5). माधुर्य भाव की भक्ति :-

माधुर्य भाव की भक्ति को मधुरा भक्ति या प्रेम लक्षणा भक्ति कहा जाता है। भक्त स्वयं को जीवात्मा एवं भगवान को परमात्मा मानकर दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यक्ति जहाँ करता है वहाँ मधुरा भक्ति मानी जाती है। जीवात्मा परमात्मा के विरह का अनुभव करती हुई उससे मिलने की आकांक्षा करती है।

"अँखड़ियाँ झाँई पड़ी पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या राम पुकारि पुकारि॥"

Spiral

Date .....

आत्मा - परमात्मा के मिलन के आनन्द का वर्णन भी कबीर ने विवाह के सांगरूपक द्वारा किया है:

"दुलहिनि गावहु मंगलचार।
मोरे घर आए हो राजा राम भरतार॥"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर एक सच्चे भक्त थे। वे भक्ति की महिमा गाते नहीं अघाते। भक्तिहीन जीवन को वे व्यर्थ बताते हैं, ऐसा व्यक्ति बार-बार जन्म लेकर संसार में आता-जाता रहता है।

Spiral

Date .....

* कबीर का समाज दर्शन

कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। छुआछूत, अंधविश्वास रूढ़िवादिता का बोलबाला था और हिन्दू-मुसलमान आपस में दंगा-फसाद करते रहते थे। धार्मिक पाखण्ड अपनी चरम सीमा पर था और धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ की रोटियां धार्मिक कट्टरता एवं उन्माद के चूल्हे पर सेंक रहे थे। कबीर ने इसका डटकर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली हुई सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भरपूर प्रयास किया।

(क) धार्मिक पाखण्ड का खण्डन -

समाज-सुधार और मानव-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर कबीर ने काव्य रचना की और इसे अपना अस्त्र बनाया। कबीर ने हिन्दू-मुसलमान दोनों के पाखण्डों का खण्डन किया तथा उन्हें सच्चे मानव-धर्म को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

"हिन्दू अपनी करें बड़ाई, गागरि छुअन न देई।
वेश्या के पायन तर सोवें यह देखो हिन्दुआई ।।"

"काँकर-पाथर जोरि के मस्जिद लई चुनाय"

(ख) मूर्ति-पूजा का विरोध :-

कबीर ने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और मन मंदिर में ही ईश्वर का निवास बताया। उन्होंने मूर्ति-पूजा तथा उसके आडम्बरों को स्पष्ट

Spiral

Date .....

रूप से नकारा तथा कहा :-

"पाहन पूजें हरि मिलें तो मैं पूजूं पहार।
घर की चाकी कोई न पूजें पीसि खाय संसार"

(ग) छुआछूत का विरोध :-

कबीर ने अपने समय में फैली छुआछूत की भावना का तीखा विरोध किया है। जाति-प्रथा के वे कट्टर निन्दक थे। वे कहते हैं :-

"जो तू बाँभन बांभनी जाया, आन बाट है क्यों नहिं आया?

इसी प्रकार उन्होंने मुसलमानों से भी प्रश्न किया है :-

"जो तू तुरक तुरकिनी जाया, भीतर खतना क्यों न कराया?"

कबीर प्रश्न करते हैं कि जब हमारे शरीर की नसों में एक जैसा रक्त प्रवाहित हो रहा है तो आप ब्राह्मण और हम शूद्र कैसे हो गए :-

"हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूध।
तुम कैसे बाँभन पाण्डे हम कैसे सूद?

(घ) पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन :-

कबीर शास्त्र ज्ञान पर नहीं आचरण की शुद्धता पर बल देते हैं।
'शास्त्र' के पण्डित को चुनौती देते हुए वे कहते हैं :-

"तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आँखिन की देखी।"

Spiral

Date .....

(६) सदाचरण पर बल :-

कबीर ने सदाचरण पर बल दिया है। उनका मत है कि अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए तथा बुरी बातों का त्याग करना चाहिए। जीवन का यही लक्ष्य रहे तो ठीक है :-

"साधू ऐसा चाहिए जैसे सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे थोथा देई उड़ाय॥"

निष्कर्ष :-

इस प्रकार कबीर एक महान् समाज-सुधारक, सत्य धर्म के प्रतिपादक, समन्वयवादी तथा क्रांतिदर्शी थे। वे समाज में प्रचलित प्रत्येक प्रकार की असमानता, बाह्याडंबर और ढोंग को समाप्त कर देना चाहते थे।

Spiral

Date .....

* कबीर की काव्य कला :-

कबीर निरक्षर थे, वे शास्त्रज्ञ विद्वान नहीं थे, तथापि भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें वाणी का डिक्टेटर कहा है।
कबीर की काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोकहित या। समाज सुधारक के रूप में उन्होंने जिस उपदेश मूलक काव्य की रचना की, उसके पीछे भी लोक कल्याण की भावना निहित थी। स्पष्ट है कि केवल कविता के लिए कविता करना कबीर का लक्ष्य नहीं था। कोरे चमत्कार प्रदर्शन का उद्देश्य लेकर वे काव्य-रचना करने नहीं चले थे।

कबीर की कविता में उपलब्ध काव्य सौंदर्य अकृत्रिम है। काव्यगत विशेषताओं का विवेचन निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है :-

(1) भाव एवं रस योजना :-

कबीर का काव्य प्रयत्न साध्य नहीं है तथापि उसमें रसगत रमणीयता एवं भाव सौन्दर्य का अनायास विधान हुआ है। उनकी वे साखियाँ जो "विरह को अंग" शीर्षक से संकलित की गई हैं, वियोग शृंगार की अभिव्यक्ति करती हैं। यथा :-

"यह तन जालौं मसि करौं ज्यूं धुवां जाइ सरग्गि।
मति वे राम दया करें बरसि बुझावें अग्गि।।"

Date .....

कबीर की उलटबासियों से जो आश्चर्य भाव अभिव्यक्त होता है उससे अद्भुत रस की सृष्टि हुई है, यथा :-

"समन्दर लागी आग, नदियाँ जलि कोयला भई।
देखि कबीरा जाग, मंछी रूखा चढ़ि गई॥"

(2) अलंकारगत रमणीयता :-

कबीर को भले ही अलंकार शास्त्र की जानकारी न रही हो किन्तु उनके काव्य में अलंकारों की छटा विद्यमान है। अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अलंकारों का सहज उपयोग किया है। कबीर के काव्य में उपलब्ध कुछ अलंकार इस प्रकार है :-

(i) सांगरूपक :-

"कबीर घोड़ा प्रेम का चेतनि चढ़ असवार।
ग्यान खड्ग गहि काल सिरि भली मचाई मार॥"

(ii) उपमा :-

"पानी केरा बुदबुदा अस मानव की जाति।
देखत ही छिप जाएगा ज्यूँ तारा प्रभात॥"

(3) प्रतीक विधान :-

प्रतीक के द्वारा अदृश्य, अगोचर, अप्रस्तुत को प्रस्तुत, गोचर एवं दृश्य बनाकर काव्य में लाया जाता है। कबीर की आध्यात्मिक अनुभूतियाँ गुह्य हैं। जिन्हें बोधगम्य

Spiral

Date .....

बनाने के लिए प्रतीकों का सहारा उन्हें लेना पड़ा है। यथा :-

"काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी।
तेरे ही नाल सरोवर पानी॥"

इस पद में नलिनी (कमलिनी) को जीवात्मा के प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है तथा जल परमात्मा का प्रतीक है।

(4) छन्द विधान :-

कबीर ने साखी, सबद और रमैनी की रचना की है। साखियाँ दोहा छन्द में हैं, रमैनी में कुछ चौपाइयों के बाद एक दोहा है, जबकि सबद 'पद' शैली में लिखे गए हैं। कबीर को छन्द शास्त्र की जानकारी नहीं थी इसीलिए दोहे जैसे छन्द में भी मात्राएँ कम या अधिक हैं। इसी प्रकार उनकी चौपाइयाँ भी मात्राओं की दृष्टि से शुद्ध नहीं कही जा सकती।

(5) भाषा सौन्दर्य :-

कबीर की भाषा मुख्य रूप से ब्रज, अवधी एवं खड़ी बोली का मिश्रण है जिसमें कहीं-कहीं भोजपुरी, पंजाबी एवं राजस्थानी भाषा के तत्व भी उपलब्ध होते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा कहा है जिसमें विभिन्न बोलियों के शब्द उपलब्ध होते हैं।
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर की भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहा है -

Spiral

Date .....

"भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कबीर भले ही एक समाज सुधारक और भक्त के रूप में लोकप्रिय रहे हों किन्तु उनकी कविता में काव्यत्व के उपादान भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध हो जाते हैं।

Spiral